St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (5)

Class- 10 पाठ - चप्पल

Date: 07/05/2020

लेखिका परिचय

दक्षिण भारतीय भाषाओं के रचना संसार में 'कावुटूरी वेंकट नारायणराव एक प्रसिद्ध हस्ताक्षर है। आज का दौर बाजारवाद, भोगवाद एवं उपनिवेशवाद का युग है। इसी युग में मनुष्यों से उसके रिश्ते, मानवीयता, उदारता एवं उसकी संवेदनशीलता कहीं न कहीं दम पीछे छूटते जा रहै है। ऐसी संकट कालीन परिस्थिति में 'नारायणराव' की कहानियां रिश्तों को जोड़ती हुई नज़र आती है। नगन्यथार्थवाद जहां पर फन फैलाए खड़ा है वही राव का रचना आदर्शवाद के चरम पराकाष्ठा का वाहक है। टूटते बिखरते रिश्ते को अपनी असलियत प्रदान करने का श्रेय 'राव जी' को जाता है।

सारांश

आज का युग बाजारवाद एवं भोगवाद का युग है। इस युग में रिश्ते, मानवीयता, उदारता एवं उनकी संवेदनशीलता का विनाश हो रहा है। ऐसे संकटकालीन युग में राव जी की कहानी टूटते एवं विघटित होते हुए रिश्तों के बीच दिशा दर्शक की भांति दृश्य है। जहां गुरु और शिष्य के बीच की प्रासंगिकता उजागर होती है।

रंगय्या के माध्यम से रिश्तो के असली मायने को राव जी प्रस्तुत करते है। पांच बच्चों के मर जाने के पश्चात रमण का रंगय्या के जीवन में पदार्पण करना एक अत्यंत सुखद घटना थी। रंगय्या का एक आदर्श पिता होने के नाते अपने बच्चे को पढ़ा लिखा कर बुलंदियों पर पहुंचाने का सपना अत्यंत मजबूत था। वह ज्ञान एवं गुरु को अपने जीवन में सर्वोपरि स्थान देता था। आसमान को छूने की आकांक्षा में रंगय्या गरीबी एवं परिस्थितियों के मार को झेलते हुए अपने बच्चे को पढ़ा रहा था। अपने 8 साल के बच्चे द्वारा मरम्मत करने हेतु दी गई मास्टर साहब के जूते रंगय्या के लिए उसके प्राणों से भी बढ़कर हो गया था। वह चप्पल की मरम्मत के लिए अपने शरीर का चमड़ा देने के लिए भी तैयार था। चप्पल के बारे में सोचते सोचते रंगय्या को अपने बच्चे की तरक्की स्मरण हो आया। वह अपना सारा काम छोड़कर रमण की तरक्की देखने के लिए एवं रमण को खाना देकर पढ़ाने वाले मास्टर साहब को साष्टांग प्रणाम करने के लिए स्कूल की तरफ चल दिया। ज्ञान एवं भोजन मास्टर साहब से प्राप्त होने के कारण वह उनका ऋणी बन चुका था- "रमण की खुशनसीबी थी कि मास्टर साहब अपने यहां उसको खाना देकर पढ़ा लिखा रहे थे। उनका ऋण किसी भी रूप में चुकाया नहीं जा सकता।"

रंगय्या एक बाजू के चाय की दुकान से चाय पीकर छोटे-मोटे काम को निपटाकर स्कूल की तरफ अपनी आशा को पूर्ण होते देखने हेतु चल दिया। छोटे से खपौल के बने स्कूल में जाने का हिम्मत रंगय्या को नहीं हो रहा था । कक्षा में मास्टर साहब बच्चों को मात्राएं कंठस्थ करवा रहे थे, उसमें उसका बच्चा भी था। उसका बेटा रमण पहली श्रेणी में पढ़ता था, काफी होशियार था। रमण को पढता देख एक पिता का हृदय भावनाओं से परिपूर्ण हो गया। वह अपने को बहुत खुशनसीब मानने लगा कि वह तो पढ़ नहीं सका लेकिन उसका बच्चा पढ़ लिखकर आसमान की ऊंचाइयों को एक दिन अवश्य छुएगा। रंगय्या भी अपने बच्चे जैसा बनने की ख्वाहिश में पढ़ने की चाह में मास्टर साहब से पूछा- "क्या मैं भी पढ़ सकता हूं?" मास्टर साहब का उत्तर- "आप जैसे लोगों के पढ़ने लिखने के लिए व्यस्को की रात्रि पाठशालाएं है। कल शाम को आप यहां आ जाइएगा मैं खुद आपको वहां दाखिल करा दूंगा। " उनका उत्तर रंगय्या का पांव जमीन पर रख रखने नहीं दिया। रंगय्या बूढ़ा एवं कमजोर हो चुका था- "उम्र के साथ-साथ रंगय्या की शक्ति भी क्षीण होती जा रही है। बच्चे को बड़ा बनाने की एक ही आकांक्षा उसके शरीर को चलाए जा रही है।"

वह झोपड़ी के अंदर जाकर मास्टर साहब का चप्पल पुन: बनाने लगा कि पोली (रंगय्या की भतीजी) अपनी मां की अस्वस्थता का संवाद रंगय्या तक पहुंचाती है। काम करते-करते वह थक चुका था। मास्टर साहब का चप्पल नवीन बनाकर उसे अटारी पर रख दिया, भूख के कारण रंगय्या प्लेटफॉर्म वाले होटल में जाकर खाने लगा। थोड़ी देर बाद हाथ मुंह धोकर थकावट के कारण पास वाले पीपल के पेड़ के नीचे बैठा ही था कि उसकी पलकें बुझ गई। कुछ समय पश्चात नारिगा नामक एक बच्चे ने उसे एक दुरसंवाद देकर उसे नींद से जगाया जगाया। वह हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ तो देखा कि थियेटर की तरफ का आसमान आग की लपटों से जल रहा है- "ज्वाला आसमान को छू रही थी।" तब एकाएक रंगय्या को मास्टर साहब के चप्पल का स्मरण हो आया। वह दूसरे को झोपड़ी में से चप्पल को लेकर आने के लिए लालच देता हैं परंतु वह विफल हो गया। तब रंगय्या स्वयं आग की लपटों में चप्पल को अपनी जान की बलि देकर बचा लिया- "रंगय्या के प्राणों का निकलना अगर किसी ने देखा हो तो उन चप्पलों ने ही देखा था! बस!

शब्दार्थ

तमन्ना- आकांक्षा, तन्मयता- तल्लीनता, फूले अंग समाना- अत्यधिक प्रसन्न होना, अर्पित- अर्पण किया हुआ, शहतीर- बड़ा और लंबा लट्ठा, माहिर- विशेषज्ञ, बहुमुल्य- बेशकीमत।

लघु प्रश्न

१) रंगय्या की क्या आशाएं थी?

उ:रंगय्या की आशा यह थी कि उसका बेटा खूब पढ़े, बड़ा आदमी बन जाए और उसकी कुलवालों में अच्छा नाम कमाए।

२) रंगय्या का हृदय कृतज्ञता से किसके लिए और क्यों भर गया?
उ: रंगय्या का हृदय कृतज्ञता से मास्टर साहब के लिए भर गया क्योंकि वे रमण को खाना देकर पढ़ा लिखा रहे थे।

३) चबूतरे पर बैठे अध्यापक से रंगय्या अपनी पढ़ाई के बारे में पूछने से मास्टर साहब ने क्या जवाब दिया?
उ: मास्टर साहब का जवाब यह था कि रंगय्या जैसे लोगों के पढ़ने लिखने के लिए वयस्को की रात्रि पाठशालाएं हैं कल शाम को वह भी वहां चला जाए तो मास्टर साहब उसे रात्रि पाठशाला में दाखिल करा देगा।

४)रंगय्या के शरीर को क्या चला रहा था?
उ: बच्चे रमण को बड़ा बनाने की एक ही आकांक्षा उसके शरीर को चलाए जा रहा था।

५) रंगय्या के प्राणों का निकलना अगर किसी ने देखा हो तो उन चप्पलों ने ही देखा था! बस! प्रस्तुत पंक्ति का आशय क्या है?
उ: झोपड़ियों में आग लगने के पश्चात संपूर्ण झोपड़ियाँ उस ज्वाला में ज्वलित हो रहा था कि रंगय्या को मास्टर साहब के चप्पलों की याद आई। ज्ञान का मोह एवं कृतज्ञता के पैरों तले रंगय्या का प्राण भी अमूल्यवान था। अपने बच्चे को बड़ा बनाने की आशाओं में एवं गुरु के प्रति आदर भाव से वह जलते हुए झोपड़ी में एकलौता इंसान रह गया। आग बुझने के पश्चात उसके ऊपर का सारा शरीर जल चुका था। चप्पल को अर्थात गुरु के इज्जत को अपने प्रांत से उन्होंने रक्षा किया।

Teacher's Name - Riya Saha